नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

फिर ना हो इस संकट की पुनरावृत्ति

इंडिगो एयरलाइंस में हाल ही में हुआ परिचालन का विशाल संकट, सैकड़ों उड़ानों का रद्द होना, घंटों की देरी, हजारों यात्रियों की ठगी जैसी परेशानी ने भारतीय नागरिक उड्डयन क्षेत्र की असल तस्वीर सामने रख दी है. यह सिर्फ एक एयरलाइन की 'आंतरिक गड़बड़ी' नहीं थी, बल्कि उस प्रणाली की थकान भी थी, जिसे पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ते हवाई यातायात के अनुरूप आधुनिक और जवाबदेह बनाया ही नहीं गया. इंडिगो की हिस्सेदारी 64 फीसदी तक पहुंच चुकी है, और यही एकाधिकार जैसे हालात इस संकट के दौरान पूरे सेक्टर को हिलाकर रख देने के लिए काफी थे. सरकार इस बार नींद से जागी है और जागनी भी चाहिए थी.

जिन यात्रियों ने हज़ारों रुपये देकर टिकट खरीदा, जिन्हें घंटों एयरपोर्ट पर बैठा छोड़ा गया, जिनका सामान गायब हुआ, या जिनकी कनेक्टिंग फ्लाइट छूट गई, वे इस देश के नागरिक हैं, और उनका धैर्य किसी एयरलाइन की अव्यवस्था पर निर्भर नहीं रह सकता.पहला सबक यही कि विस्तार क्षमता देखकर नहीं, क्षमता बनाकर किया जाता है. इंडिगो ने उड़ानों की संख्या तो तेजी से बढ़ाई, पर उसके मुकाबले पायलट, तकनीकी स्टाफ और क्रू प्रबंधन का ढांचा उसी अनुपात में विकसित नहीं हुआ. डीजीसीए द्वारा लागू एफडीएल (उड़ान ड्यूटी समय सीमा) नियमों को लेकर एयरलाइन की लापरवाही ने स्थिति को और बिगाड़ा. पायलट थके हुए थे, क्रू शेड्यूल बिखरा हुआ था, और प्रबंधन स्थिति संभालने में नाकाम रहा. दूसरा सबक यह कि एकाधिकार कभी भी खतरा बन सकता है. एक एयरलाइन अगर लड़खड़ाए और पूरा बाजार हिल जाए, तो यह बाज़ार की कमजोरी है, न कि मजबूती. तीसरा सबक यह कि यात्री अधिकार कानून किताबों में नहीं, जमीन पर लागू होने चाहिए. रिफंड में देरी, लगेज खोना, और कॉल सेंटर से राहत न मिलना, यह बताता है कि यात्री हितों की सुरक्षा सिर्फ घोषणाओं तक सीमित है.

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने जो कदम उठाए हैं, वे फिलहाल पर्याप्त हैं, क्योंकि पहली बार किसी बड़ी एयरलाइन पर इतनी कठोर सख्ती देखने को मिली है. यह कदम दिशा सही दिखाते हैं, लेकिन सवाल यह भी है कि ऐसी स्थिति बनने से पहले इसकी निगरानी क्यों नहीं हुई ? भविष्य का रास्ता ऑडिट, मॉनिटरिंग और यात्री-केंद्रित सुधार से होकर जाता है. सरकार ने अब जो बड़े सुधार घोषित किए हैं, वे सही दिशा में हैं जैसे सख्त एफडीएल लागू करना, सभी एयरलाइंस का परिचालन ऑडिट, रियल-टाइम किराया और उड़ान मॉनिटरिंग, यात्री अधिकारों में बड़ा सुधार, और इनमें सबसे महत्वपूर्ण है बाज़ार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना. जाहिर है यह वेक-अप कॉल है और यदि यह भी व्यर्थ गया, तो अगला संकट और बड़ा होगा. इंडिगो संकट ने साफ बता दिया है कि भारतीय उड्डयन क्षेत्र को अब 'जुगाड़ प्रबंधन' से नहीं, व्यवस्थित और वैज्ञानिक प्रबंधन से चलाना होगा. यात्रियों की सुरक्षा, सुविधा और सम्मान- इन तीनों पर समझौता करने की गुंजाइश अब बिल्कुल नहीं है. सरकार ने इस बार कड़ा रुख दिखाया है, लेकिन वास्तविक बदलाव तभी दिखेगा जब नियमों का पालन रोज़ाना, हर उड़ान में, और पूरे सेक्टर में हो. यात्री अब सिर्फ उड़ान नहीं खरीदते, वे भरोसा खरीदते हैं और उस भरोसे की रक्षा करना सरकार और एयरलाइन, दोनों की संयुक्त जिम्मेदारी है.

विमान यात्रियों के हित में नया कानून आवश्यक

इंडिगो की घोर लापरवाही की वजह से एक सप्ताह से ज्यादा समय से हजारों विमान यात्री हलाकान-परेशान हो रहे हैं. दुनिया के किसी देश में इतनी लंबी अंधेरगर्दी नहीं चलती. यात्रियों को न केवल तत्काल पूरा किराया रिफंड करना चाहिए बल्कि उन्हें हुई मानसिक पीड़ा और अन्य नुकसान के लिए यथोचित मुआवजा भी दिया जाना चाहिए. विदेश में यात्रियों को न्याय दिलाने के लिए ऐसे कानून मौजूद हैं. भारत में भी विमान यात्रियों के अधिकारों से जुड़ा सख्त कानून होना चाहिए, जिसके अंतर्गत एयरलाइंस की गलती से टिकट कैंसल होने, सामान पहुंचने में देरी या उसके पीछे छूट जाने पर विमान सेवा को जिम्मेदार माना जाए. यह भ्रष्टाचार नहीं तो और क्या है कि एयरलाइंस यात्रियों की मजबूरी का अनुचित फायदा उठाते हुए मनमानी किराया वृद्धि कर देती हैं यह लूट नहीं तो और क्या है?

अमेरिका में यूनाइटेड, पैन एम व डेल्टा जैसी एयरलाइंस है जहां ग्राहक समूह क्लास एक्शन सूट दायर कर विमान कंपनी में सामूहिक हर्जाना मांग सकता है. उड़ान में विलंब से कनेक्टिंग फ्लाइट मिस होने पर भी वहां हर्जाना मिलता है. इस तरह के कानून के बारे में सरकार को पहल करनी होगी क्योंकि साधन संपन्न बड़ी कंपनियों से मुकदमा लड़ना व जीतना आसान नहीं है. यह कितना बड़ा अन्याय है कि आम यात्री को दोगुना, तिगुना किराया देने के बाद भी हवाई यात्रा नसीब नहीं हो पा रही है. विगत वर्षों में किंगफिशर, जेट एयरवेज, गोएथर जैसी विमान सेवाएं बंद होने का पूरा फायदा इंडिगो ने उठाया. स्पाइसजेट जैसी बड़ी कंपनी कर्ज से जूझ रही है. एयर इंडिया और विस्तारा का गत वर्ष विलय हो गया. इसलिए इंडिगो का एकाधिकार होता चला गया. सरकार ने एकाधिकार को सीमित करने तथा छोटी एयरलाइंस को प्रोत्साहन देने की दिशा में कदम नहीं उठाया. नए हवाई अड्डे बनने से इंडिगो को पैर फैलाने का मौका मिला.

आज इंडिगो देश के आसमान के 65 प्रतिशत हिस्से को कंट्रोल करती है. नागरी उड्डयन महानिदेशक ने नए फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन नियमों के प्रमुख प्रावधानों से इंडिगो अस्थायी रूप से एक बार के लिए 10 फरवरी तक छूट दी है. इस राहत की हर पखवाड़े समीक्षा होगी. इंडिगो को विमान चालक दल (क्रू) के उपयोग तथा रोस्टर की नियमित रिपोर्ट पेश करनी होगी, उसे 30 दिन के भीतर रोडमैप का पूरी तरह पालन करना होगा. यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एफडीटीएल नियम बनाए गए जो विदेश में पहले से प्रचलित हैं लेकिन उन्हें भारत की एयरलाइंस ने गंभीरता से लागू नहीं किया. देश के नागरी उड्डयन सेक्टर में काफी वृद्धि हुई. अधिक लोग हवाई प्रवास करने लगे लेकिन एयर लाइंस का संचालन ढीला है. मुनाफाखोरी, धांधली और दिखावा अधिक है. एयर इंडिया और इंडिगो का वर्चस्व बना हुआ है. घरेलू उड़ानों में उनका 90 प्रतिशत हिस्सा है. 8 जनवरी 2024 से लेकर 8 दिसंबर 2025 तक 23 महीने की मुद्दत मिलने पर भी इंडिगो ने सरकारी नियमों का पालन नहीं किया. जब अन्य एयरलाइंस नियमों को मान रही थी तब इंडिगो ने विमानों की तादाद बढ़ाने के साथ अपने पायलटों व क्रू की तादाद क्यों नहीं बढ़ाई? पायलटों से ड्यूटी ऑवर के बाद काम नहीं लिया जा सकता. इंडिगो ने खुद को नहीं सुधारा. उसका रवैया रेगुलेटर पर दबाव डालने का रहा ताकि वह नए सुरक्षा नियमों से उसे छूट दें, एयरपोर्ट का ग्राउंड स्टाफ अकारण ही यात्रियों की नाराजगी झेल रहा है जबकि कसूरवार इंडिगो है. हालात सामान्य बनाने के लिए सरकार को प्रभावी हस्तक्षेप करना होगा.

-चंद्रमोहन द्विवेदी

एकाधिकार की वजह से मुसीबत बढ़ी

भारत में भी विमान यात्रियों के अधिकारों से जुड़ा सख्त कानून होना चाहिए, जिसके अंतर्गत एयरलाइंस की गलती से टिकट कैंसल होने, सामान पहुंचने में देरी या उसके पीछे छूट जाने पर विमान सेवा को जिम्मेदार माना जाए.

दुष्कर्मी हीरो की रिहाई पर सवाल

एर्नाकुलम के डिस्ट्रक्ट एंड प्रिंसिपल सेशन न्यायाधीश हनी एम. वर्गीज की अदालत 8 दिसंबर को खचाखच भरी थी. यह स्वाभाविक भी था क्योंकि 2017 के उस दुष्कर्म के केस का फैसला सुनाया जाना था, जो मलयालम सिनेमा के टॉप स्टार दिलीप के आरोपी और बहुभाषी महिला अभिनेत्री के पीड़ित होने की वजह से राष्ट्रीय सुर्खी बना था. न्यायाधीश ने सबको चौंकाते हुए दिलीप व उनके करीबी दोस्त सरथ सहित दो अन्यों (चाली थॉमस व सनिल कुमार उर्फ मेस्त्री को तो बरी कर दिया, लेकिन 6 व्यक्तियों को दोषी घोषित किया. दिलीप का असली नाम पी. गोपालकृष्णन है. उसने दावा किया है कि यह केस कुछ पुलिस अधिकारियों व मीडिया के एक वर्ग का वास्तविक षड्यंत्र था, उन्हें फंसाने का, ताकि उनका फिल्मी करिअर बर्बाद हो जाए. दूसरी ओर केरल की राज्य सरकार ने कहा है कि वह निचली अदालत के फैसले के विरुद्ध हाईकोर्ट में अपील करेगी. क्योंकि वह पीड़ित को न्याय दिलाना चाहती है. सभी आरोपियों पर संबंधित महिला का अपहरण करने, सामूहिक दुष्कर्म करने, बंधक बनाकर रखने, आपराधिक षड्यंत्र आदि के आरोप लगाए गए थे. छह आरोपियों को दोषी पाते हुए न्यायाधीश वर्गीज ने कहा, 'चूंकि अपराध संगीन व गंभीर है और एक महिला के खिलाफ किया गया है, इसलिए आरोपियों के जमानती बांड्स को भी रद्द किया जाता है ताकि उन्हें हिरासत में लिया जा सके.' लेकिन दिलीप को बरी करते हुए न्यायाधीश ने कहा कि अभियोजन पक्ष उनके खिलाफ लगे आरोपों को साबित नहीं कर सका. दिलीप को आईटी एक्ट के तहत लगे आरोपों से भी बरी कर दिया गया है. दिलीप पर आरोप था कि उन्होंने गुंडों को सुपारी दी कि महिला एक्टर का अपहरण करके उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया जाए और इस अपराध को फिल्माया भी जाए. दुष्कर्म मामलों में आरोपियों का बरी हो जाना बार-बार इस तथ्य को याद दिलाता है कि अभियोजन पक्ष जाने-अनजाने में कमजोर दलीलें रखता है और बेचारी पीड़ित न्याय के लिए केवल प्रतीक्षा करती रहती है. इस केस में भी राज्य सरकार अपील करेगी. न्याय का पहिया घूमता रहेगा, कितने वर्षों तक, किसी को नहीं मालूम. इस हाई-प्रोफाइल केस में 2017 से जो उतार-चढ़ाव आया है, उस पर नजर डालने से भी मालूम हो जाता है कि दाल में कुछ काला तो अवश्य है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

बैठक-बैठक खेलकर अपनी ताकत जता रहे चंबल के छत्रप

हरीश दुबे

'भरोसा रखना है तो खुद पर रख, शक करने के लिए लोग हैं, कुछ करके दिखा दुनिया को, तालियां बजाने के लिए लोग हैं.' लगता है कि सूबे के छत्रप सिंधिया और ग्वालियर के सांसद भारतसिंह कुशवाह इसी फलसफे पर चल रहे हैं. ग्वालियर के विकास से जुड़े मसलों पर खुद को ज्यादा चिंतित और संवेदनशील साबित करने के लिए इन दोनों नेताओं के दरम्यान जिस कदर होड़ सी चल रही है और बैठक-बैठक का खेल सा चल रहा है, उसे देखकर अब जनमानस के बीच कहा जाने लगा है कि विकास के मसले पर अलग अलग ढपली बजाने के बजाए यदि दोनों वरिष्ठ नुमाइंदे संयुक्त रूप से प्रयास करें तो विकास के मामले में ग्वालियर के दामन पर लग रहे सूबे के अन्य शहरों के मुकाबले पिछड़ जाने की तोहमत हटने में देर नहीं लगेगी.

हालांकि सिंधिया की इसी तरह की स्पर्धा डेढ़ साल पहले तक ग्वालियर में विवेक शेजवलकर और गुना में केपी यादव के साथ भी चली थी, महल के कथित हस्तक्षेप के खिलाफ शिकवा शिकायतों का दौर खूब चला लेकिन इन दोनों तत्कालीन सांसदों ने सिंधिया के बड़े राजनीतिक कद को भांपते हुए उन्हें सीधी चुनौती देने के बजाए साइड लाइन अपनाना ज्यादा वाजिब समझा. लेकिन सिंधिया के गृहनगर से चुने गए मौजूदा सांसद भारतसिंह के तेवर कुछ और ही बयां कर रहे हैं. ग्वालियर में चल रहे तमाम प्रोजेक्ट्स और भविष्य की स्कीमों को लेकर भारतसिंह कलेक्ट्रेट में ताबड़तोड़ बैठकें करने में जुटे हैं और इसके जवाब में सिंधिया द्वारा भी ऐसी ही बैठकें ली जा रही हैं. शहर विकास से मुतालिक विषयों पर समन्वित प्रयास करने के बजाए एकला चलो के इस राग की शुरुआत किस तरफ से पहले हुई, इसका जवाब न सीधा है और न आसान है लेकिन इतना अवश्य है कि एक ही दल के दोनों नेताओं द्वारा अलग अलग की जा रही बैठकों के एजेंडा के बिन्दु एक ही रहते हैं, मसलन...चंबल पेयजल परियोजना, रेलवे स्टेशन जीर्णोद्धार कार्य, सड़कों का नवनिर्माण, एलीवेटेड रोड आदि. एक नेता द्वारा ली गई बैठक के जवाब में दूसरे नेता द्वारा ली जाने वाली बैठक में भी इन योजनाओं की न सिर्फ समीक्षा की जाती है बल्कि अधिकारियों को वही दिशा-निर्देश दिए जाते हैं जो विगत बैठक में दिए गए थे.

अभी इसी इतवार के रोज सांसद भारतसिंह ने कलेक्ट्रेट में अफसरों और नेताओं की बैठक बुलाई थी तो आज बुधवार को सिंधिया ने भी इन्ही विषयों पर बैठक बुलाई. इस समय संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा है लेकिन सिंधिया खास तौर पर यही बैठक लेने ग्वालियर तशरीफ लाए. भारत सिंह खुले तौर पर विधानसभा स्पीकर नरेन्द्र सिंह के कट्टर समर्थक हैं, कहा तो यही जाता है कि ग्वालियर सांसद को सिंधिया केनरेन्द्र सिंह के कैम्पस से ही ऊर्जा मिल रही है. इन बैठकों के बहाने ग्वालियर की भाजपाई सियासत में साफ तौर पर दो विभाजन रेखाएं बन गई हैं. सिंधिया द्वारा बुलाई बैठक में नरेंद्र सिंह खेमे के जनप्रतिनिधि नहीं जाते तो भारत सिंह की बैठकों में सिंधिया खेमे के नेता जाना जरूरी नहीं समझते.

अमित शाह आ रहे हैं, चल रही मैराथन तैयारी

अमित शाह ग्वालियर आ रहे हैं, हालांकि दौरा कार्यक्रम अभी आधिकारिक तौर पर फाइनल नहीं हुआ है लेकिन दिल्ली से संकेत मिलते ही प्रशासन तैयारी में जुट गया है. जिला प्रशासन एवं नगर निगम के अफसरान तैयारी बैठकों में जुटे हैं. शाह आएंगे तो सूबे के वजीर ए आला का आना भी तय है. ऊपर से हुक्म है कि तैयारियों में कोताही न बरती जाए.

निशानेबाज

असरदार है जादू भरी आवाज संगीत से बीमारी का इलाज

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, महाराष्ट्र के अहिल्यानगर में संगीत चिकित्सा का अनोखा प्रयोग हुआ है. वहां तनाव और अवसाद के मरीज इस म्यूजिक थेरेपी से खुश व संतुष्ट हो गए. उनका डिप्रेशन दूर हो गया. सरोज आल्हाट व उनकी टीम ने मरीजों को पसंदीदा गाने, गजलें व भक्ति संगीत सुनाया. गिटार, सिंथेसाइजर भी बजाया. इससे एक 90 वर्ष की दादी जो लंबे समय से बिस्तर पर पड़ी थी, वॉकर की मदद से चलने लगी. संगीत चिकित्सा करने वालों का दावा है कि इससे कैन्सर और पारकिंसंस के मरीजों को भी लाभ पहुंच सकता है.'

हमने कहा, 'यदि संगीत सुनकर बीमार अच्छे होने लगे तो डॉक्टर, अस्पताल और दवाइयों का क्या होगा? हमें तो इस बात पर विश्वास नहीं है. क्या मरीज को लगी सलाइन हटाकर उसके कान में ईयरफोन लगाकर गाना सुनाने से वह अच्छा हो जाएगा?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मन प्रसन्न हो जाए तो तन भी दुरुस्त होने लगता है. भगवान कृष्ण जब बांसुरी बजाते थे तो सारी गाय दौड़ी चली आती थीं. ब्रज की गोपियां बंसी की धुन सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाती थीं. इंसान ही नहीं, प्रकृति पर भी संगीत का प्रभाव पड़ता है. गोशाला में मधुर संगीत बजाने पर गाय अधिक दूध देने लगीं. तानसेन मेघ मल्हार गाते थे तो वर्षा होने लगती थी. दीपकराग गाने से दीये अपने आप जलने लगते थे. संगीत में अनेक राग होते हैं जिनमें यमन, भैरवी, भूपाली, काफी, भीमपलासी, बागेश्री, मल्हार, खमाज, आसावरी, कल्याण, मालकौंस आदि हैं.'

हमने कहा, 'पुराना फिल्मी संगीत भी मन को लुभाता था. मोहम्मद रफी ने गाया था- मन तड़पत हरिदर्शन को आज! लता मंगेशकर, मुकेश, किशोरकुमार, मन्ना डे, हेमंत कुमार के गीतों का कुछ अलग ही आनंद था. आज वह मेलोडी गायब हो गई. इतने पर भी पं. रविशंकर का सितार, पन्नालाल घोष व हरिप्रसाद चौरसिया की बांसुरी, बिसमिल्ला खां की शहनाई भारतीय संगीत का अमर अध्याय रहे हैं. किसी का मन बेचैन हो तो उसका मूड ठीक करने के लिए सुना दीजिए- नाचे मन मोरा मगन तिग धा धीगी-धीगी, बदरा घिर आए, ऋतु है भीगी भीगी !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12107 - डॉ. सागर खादीवाला

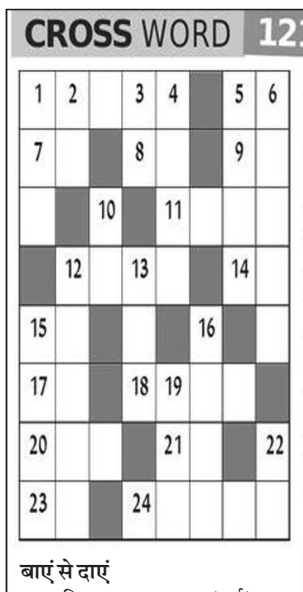

बाएं से दाएं

1. चिलम का ढक्कन (उर्दू) 5. पानी 7. अंश, भाग, ऋण को थोड़ा-थोड़ा करके देने की क्रिया 8. नक्षत्र, सितारा, बाली की पत्नी का नाम 9. नख 11. घर के लोग, कुटुंब, बाल-बच्चे, वंश 12. पनपना, पल्लवित होना 14. साधारण बनावट का, सीधा, सरल 15. हृदय, मन, छाती 17. पातकी, पाप करने वाला 18. ईश्वर का भक्त, पददलित तथा अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम 20. आने-जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग 21. फेन 23. नासिका, प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु 24. खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना

ऊपर से नीचे

1. इलाज, औषधोपचार 2. अशक्त, कमजोर, शिथिल, थका हुआ 3. बेटे का बेटा, पौत्र 4. शाप देना 5. बारातियों के ठहरने का स्थान 6. जो बल खाता गया हो 10. पहलवान 12. दूसरों को कष्ट या दुख देने वाला 13. कारण, हेतु (उर्दू) 15. पूजा, आराधना 16. बकरे को भी निगल जाने वाला भारी सांप 19. लुभाना, किसी को अपने ऊपर प्रसन्न करना 22. खेत में उपजने के लिए बीज बिखेरना, किसी बात का सूत्रपात करना

Solution 12106

सं	शो	ध	न		ब	ह	ना
ग	ला	ना		अ	म	रा	ई
दि		दे	हां	त		र	
ल		श	क	ल		त	म
	सु		ना		स		म
आ	श	ना		पु	रा	त	त्व
सा	रं	ग		का	य	र	
र	ग		ज्ञ	र		स	स्ता

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा, प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी. पद का लाभ प्राप्त होगा. व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु वर्ग से कष्ट होगा. मित्र के कारण कार्य में व्यवधान आ सकता है. व्यर्थ के वाद विवाद से दूर रहें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ प्राप्त होगा. सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु वर्ग से कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थिति में सुधार होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्य क्षेत्र में रूचि रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को कार्यों में व्यवधान आ सकता है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शालीनता से सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, बड़े नेत्रों वाला शरीर से कोमल एवं मन में भावुक होगा. स्वास्थ्य में कुछ नरम गरम रहेगा, अपनी इच्छानुसार कार्य करेगा, दूसरों को शीघ्र अपनी ओर आकर्षित करेगा. प्रवास का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

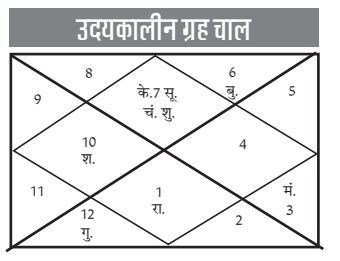

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 पौष कृष्ण सप्तमीं गुरूवासरे शाम 6/48, मघा नक्षत्रे दिन 8/2, विष्कुम्भ योगे शाम 5/3, विष्टि करणे सू.उ. 6/46, सू.अ. 5/14, चन्द्रचार सिंह, शु.रा. 5, 7, 8, 11, 12, 3 अ.रा. 6, 9, 10, 1, 2, 4 शुभांक- 7, 9, 3.

व्यापार भविष्य

पौष कृष्ण सप्तमीं को मघा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, सरसों, अलसी, अरंडी, बिनौला, मूँगफली, घी, तेल, में तेजी का रूख रहेगी. कपास रूई से बनी वस्तुओं में तेजी होगी. भाग्यांक 7579 है.

मेष- समय पर काम पूरा करने में परेशानी होगी, विरोधी की चालों को समझ नहीं सकेंगे, राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में संतोष रहेगा.

वृषभ- साझेदारी में किसी बड़ी योजना पर गंभीरता से विचार होगा, अचानक किसी कार्य में व्यस्तता रहेगी, समस्या का सरलता से समाधान होगा, अतिथि आगमन संभव है.

मिथुन- कानूनी मामले में सावधानी से निर्णय करें, खोया आत्म विश्वास फिर जागृत होगा, किसी से विवाद हो सकता है, परिश्रम की अधिकता रहेगी.

कर्क- समय पर वादा पूरा नहीं कर पाने का मलाल रहेगा, आत्म विश्वास से अपनी बात कहें, सफलता मिलेगी, अत्याधिक विश्वास करना हानिप्रद रहेगा, विवाद हो सकता है.

सिंह- बीती बातों को भूलकर आगे काम करें, इससे शांति और सफलता मिलेगी, कौटुम्बिक मामलों में सावधानी रखें, सहयोग में कमी होगी, आकस्मिक प्रवास बन सकता है.

कन्या- प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, शादी विवाह की चर्चा में सफलता मिलेगी, अतिथि आगमन होगा, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

तुला- मित्रों की मदद से सारे काम निपटा लेंगे, सूझबूझ से अच्छा आर्थिक लाभ होगा, वाहन मशीनरी आदि के कार्यों में सावधानी रखें, धार्मिक कार्यों में खर्च अधिक होगा.

वृश्चिक- नई योजना शुरू करने में अड़चने आयेंगी, घर में उत्साह का माहौल रहेगा, दूसरों के कारण परेशानी होगी, मांगलिक कार्य बनेगा.

धनु- कार्य की गति धीमी रहने से निराशा होगी, समझौता करना लाभकारी रहेगा, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी, समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें.

मकर- जरूरी काम में व्यस्तता रहेगी, मित्रों के व्यवहार से दुख होगा, व्यापार व्यवसाय को बढ़ाने का प्रयास करें, अनावश्यक विवादों को टालें.

कुम्भ- अनहोनी टलने से विशेष खुशी होगी, धर्म कर्म के कार्य में भागीदारी रहेगी, कामकाज में तरक्की होगी, खरीदी बिक्री के कार्यों में सतर्कता रखें.

मीन- अधिकारी आपकी बातों से सहमत होंगे, खानपान पर ध्यान रखें, धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, आर्थिक कार्यों में सफलता मिलेगी.

SUDOKU 7239

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7238

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5